हिमाचल प्रदेश विधान सभा

विधान सभा की बैठक सोमवार, दिनांक 19 दिसम्बर, 2016 को माननीय अध्यक्ष, श्री बृज बिहारी लाल बुटेल की अध्यक्षता में विधान सभा भवन, तपोवन, धर्मशाला-176215 में 2:00 बजे अपराह्न आरम्भ हुई।

19.12.2016/1400/**SS/AG**/1

अध्यक्ष: मैं, माननीय सदस्य, सदन में उपस्थित आप सभी का आज से आरम्भ हो रहे शीतकालीन सत्र में हार्दिक स्वागत करता हूं। हिमाचल प्रदेश विधान सभा की पूरे देश में अपनी एक गरिमा है और हमारा जो डिबेट का स्तर है वह भी काफी उच्च रहा है। उसी गरिमा को बरकरार रखते हुए मेरा आप सभी से अनुरोध रहेगा कि सदन के संचालन में मुझे अपना सहयोग दें और उच्च परम्पराओं को बनाये रखने में मेरा प्रयास रहेगा कि सभी माननीय सदस्यों को अपनी बात नियमानुसार सदन में रखने का मौका प्रदान करूं। इसके साथ ही मैं सरकार से भी यह उम्मीद करता हूं कि माननीय सदस्यों द्वारा सदन में उठाये गये विषयों का पूर्णतः उत्तर दें। इससे पूर्व कि आज की कार्यवाही आरम्भ करें मेरा सभा मण्डप में उपस्थित सभी से निवेदन है कि वे राष्ट्रीय गान के लिए अपने-अपने स्थान पर खड़े हो जाएं।

(**सभा मण्डप में उपस्थित सभी राष्ट्रीय गान के लिए अपने-अपने स्थान पर खड़े हुए।**)

शोकोद्गार

अब शोकोद्गार होंगे। अब माननीय मुख्य मंत्री स्वर्गीय श्री ईश्वर दास धीमान, सदस्य, 12वीं विधान सभा, हिमाचल प्रदेश के निधन पर शोकोद्गार प्रस्तुत करेंगे।

मुख्य मंत्री जारी श्रीमती के0एस0

19.12.2016/1405/**केएस/एजी**/1

मुख्य मंत्री: अध्यक्ष महोदय, मुझे इस माननीय सदन को यह सूचित करते हुए अत्यन्त दुख हो रहा है कि विधायक श्री ईश्वर दास धीमान जी का 15 नवम्बर, 2016 को उनके पैतृक निवास स्थान दियालड़ी में निधन हो गया था। यह माननीय सदन उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

स्वर्गीय श्री ईश्वर दास धीमान का जन्म 17 नवम्बर, 1934 को हमीरपुर में हुआ

था। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ तथा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला से एम0ए0 एवं एम0एड0 की डिग्रियां प्राप्त की। स्वर्गीय श्री ईश्वर दास धीमान ने वर्ष 1990, 1993, 1998, 2003, 2007 तथा 2012 में लगातार छः बार भोरंज विधान सभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया।

श्री धीमान वर्ष 1998 से वर्ष 2003 तथा वर्ष 2007 से वर्ष 2012 तक प्रदेश में शिक्षा मंत्री रहे। उनकी सामाजिक कार्यों तथा गरीब लोगों की सेवा में विशेष रुचि थी। उन्होंने हमेशा ही पिछड़े व कमज़ोर वर्ग के उत्थान के लिए कार्य किया। यह माननीय सदन श्री ईश्वर दास धीमान जी द्वारा प्रदेश तथा समाज के लिए की गई सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा करता है।

उनके निधन पर हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए यह माननीय सदन ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा उनके परिजनों को इस असहनीय दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

19.12.2016/1405/**केएस/एजी**/2

अध्यक्ष: अब श्री प्रेम कुमार धूमल जी, माननीय विपक्ष के नेता अपने विचार रखेंगें।

प्रो0 प्रेम कुमार धूमल: आदरणीय अध्यक्ष जी, बहुत दुख का विषय है कि मॉनसून सत्र के बाद जब हम इस शीतकालीन सत्र के लिए यहां एकत्रित हुए हैं तो इस सदन के एक सदस्य हमारे बीच में नहीं है। मुझे याद है पिछले सत्र के दौरान उनको स्वास्थ्य की कोई समस्या थी लेकिन फिर भी जिस दिन तरखान जाति को भी अनुसूचित जाति में शामिल करने का प्रस्ताव सदन में आया, स्वास्थ्य की दिक्कत होने के बावजूद उन्होंने कहा कि मैं इसमें पार्टिसिपेट करुंगा। अध्यक्ष महोदय, श्री धीमान ने

श्रीमती ए0वी0द्वारा जारी---

19.12.2016/1410/AV/AS/1

शोकोद्गार------------------ जारी

प्रो0 प्रेम कुमार धूमल ---- क्रमागत

डी0ए0वी0 हाई स्कूल, टोणी देवी में पढ़ाया था, जहां हम विद्यार्थी रहे। वर्ष 1990 में जब वे पहली बार विधायक बनें तो उनके साथ ही उनके विद्यार्थी डॉ0 लश्करी राम जी भी विधायक चुने गये थे और वे उनको गुरूजी करके बुलाते थे। उनका व्यवहार, सज्जनता और उनकी योग्यता के कारण उनको लगभग हर विधायक गुरूजी करके सम्बोधित करता था। श्री धीमान जी बहुत ही मेहनती थे, कम बोलते थे मगर जितना बोलते थे वह सारगर्भित होता था। एक ही चुनाव क्षेत्र से लगातार 6 बार जीतना उनकी लोकप्रीयता का प्रमाण है। पार्टी ने जो भी दायित्व श्री धीमान जी को दिया उन्होंने उसको हमेशा पूरा निभाया। वह अनुसूचित जाति मोर्चा के पहले प्रदेश उपाध्यक्ष और फिर प्रदेश अध्यक्ष रहें। इसके अलावा दो बार शिक्षा मंत्री का पद ग्रहण करके उसको बड़ी बखूबी से निभाते रहें। विधायकों में साधारणतया एक प्रभाव होता था कि जो शिक्षा मंत्री बनता है उससे लोग इतने नाराज़ हो जाते हैं कि अगले चुनाव में वह जीतता नहीं। लेकिन दोनों बार शिक्षा मंत्री रहने के बावजूद उन्होंने शानदार ढंग से चुनाव जीता और इस मिथ को भी तोड़ा था। शिक्षा विभाग एक बहुत बड़ा विभाग है और इसमें लगभग 50 छोटी-बड़ी युनियनें काम करती हैं। हर युनियन की अपनी-अपनी डिमाण्ड्ज और समस्याएं होती हैं। मगर जब वे 10 वर्ष शिक्षा मंत्री रहें तो एक बार भी ऐसा अवसर नहीं आया कि कोई युनियन उनसे नाराज़ हुई हो। उनके पास जो भी आता था वे उसको संतुष्ट करने का प्रयास करते थे और देर रात तक अपने कार्यालय का काम निपटाते थे। मैं उनके देहावसान से दो दिन पहले उनसे मिला था, तब उन्हें चलने के साथ-साथ बाजू उठाने में दिक्कत हो रहीथी। मुझे लगता है कि उस नई कठिनाई के कारण वे निराश थे और अपने जन्म दिन से दो दिन पहले उनका देहावसान हुआ। मैं अपनी ओर से तथा अपने विधायक दल की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके परिवार तथा हमारी पार्टी को इस सदमे

को सहन करने की शक्ति दें।

अगर आप अनुमति दें और यह हाउस ठीक समझें तो इसी दौरान तमिलनाडू की पूर्व मुख्य मंत्री सुश्री जयललिता का भी निधन हुआ है, हम उनको भी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

समाप्त

19.12.2016/1410/**AV**/**AS**/2

मुख्य मंत्री : मुझे इस माननीय सदन को यह सूचित करते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है कि तमिलनाडु की पूर्व मुख्य मंत्री सुश्री जयललिता का 5 दिसम्बर, 2016 को रात 11.30 बजे चैन्नई में निधन हो गया था। यह माननीय सदन उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

स्वर्गीय सुश्री जयललिता का जन्म 24 फरवरी, 1948 को एक अय्यर परिवार में मैसूर राज्य जो कि अब कर्नाटक का हिस्सा है, के मांडया जिला के पांडवपुरा ताल्लुक में मेलूरकोट गांव में हुआ था।

श्री वर्मा द्वारा जारी

19/12/2016/1415/TCV/AS/1

माननीय मुख्य मंत्री --- जारी

उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पहले बंगलौर और बाद में चैन्नई में हुई। मात्र 15 वर्ष की आयु में उन्होंने कन्नड़ फिल्मों से अपना फिल्मी करियर आरम्भ किया। तत्पश्चात् उन्होंने लगभग 140 तेलगु, कन्नड तथा हिन्दी फिल्मों में भी सराहनीय भूमिका निभाई। वह अपने समय की एक सफल अभिनेत्री थी।

तमिलनाडू के तत्कालीन मुख्यमंत्री एवं जयललिता ने पूर्व में फिल्मों में सह-कलाकार तथा एम0जी0 रामचन्द्रन ने उन्हें 1982 में AIADMK में शामिल कर Propaganda

Secretary बनाया। तत्पश्चात् 1984 से 1989 तक वह तमिलनाडू से राज्यसभा की सदस्य रहीं। 1989 के विधान सभा चुनाव के पश्चात् उन्होंने DMK समर्थित सरकार में नेता प्रतिपक्ष की भूमिका निभाई। वे 24 जून, 1991 से 12 मई, 1996 तक राज्य की पहले निर्वाचित मुख्यमंत्री और राज्य की सबसे कम उम्र की मुख्यमंत्री रही। 14वीं राज्य विधान सभा में बहुमत हासिल किया तो उन्होंने तीसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। तत्पश्चात् 2016 के विधान सभा चुनाव में अपनी पार्टी को प्रचण्ड बहुमत दिलाया तथा पुनः सत्ता में लाकर मुख्यमंत्री पद पर आसीन हुई। वह कुल 5 बार तमिलनाडू की मुख्यमंत्री रहीं। उन्होंने गरीब और असहाय लोगों के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं सफल ढंग से कार्यान्वित की। राजनीति में उनके समर्थक उन्हें अम्मा कहकर बुलाते थे। सुश्री जयललिता ने राष्ट्रीय राजनीति में भी समय-समय पर अहम भूमिका निभाई। माननीय सदन ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा उनके परिजनों को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

19/12/2016/1415/TCV/AS/2

सिंचाई एवं जन-स्वास्थ्य मंत्री: माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री ईश्वर दास धीमान का जन्म 17 नवम्बर, 1934 को हमीरपुर में हुआ था। वह अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी, दो पुत्रियां व पुत्र को छोड़ गये हैं। उनके निधन से हम सभी को गहरा दुःख हुआ है। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ तथा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से एम0 एवं एम0एड0 की डिग्री प्राप्त की थी। वे 1990, 1993, 1998, 2003, 2007 तथा 2012 में लगातार छः बार मेवा विधान सभा क्षेत्र (वर्तमान में भोरंज विधान सभा क्षेत्र) से विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। प्रदेश के शिक्षा मंत्री रहते हुए उन्होंने बहुत अच्छे कार्य किए। गरीब लोगों की सेवा में उनकी विशेष रूची थी तथा उनके उत्थान के लिए वे हमेशा तत्पर रहते थे। किसी भी कार्य को श्रेष्ठता से करना उनकी खासियत थी। 15 नवम्बर, 2016 को 82 साल की उम्र में उनका देहान्त उनके पैतृक स्थान जिला हमीरपुर के दियालड़ी गांव में हुआ। मैं उनके संतप्त परिवार के प्रति अपनी सेवा व्यक्त करती हूं और ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

श्रीमती एन0एस0---- द्वारा जारी ।

19/12/2016/1420/एन.एस./ए.जी./1

सिंचाई एवं जन-स्वास्थ्य मंत्री -----जारी।

अभी हाल ही में स्वर्गीय सुश्री जयललिता जी का भी निधन हुआ है और वे तमिलनाडु की मुख्यमंत्री थी। उन्होंने अपनी जिन्दगी में बहुत काम किए और उन्होंने वहां की जनता का बहुत साथ दिया था। जब उनकी मृत्यु हुई तो हम समझते थे कि कैसे हुई? एकदम से इनकी मृत्यु का बहुत बड़ा धक्का सबको लगा। वह एक जनाधार वाली महिला थी और वहां के लोग उनको बड़े प्यार और सदभावना से देखते थे। मैं समझती हूं कि हिन्दुस्तान में इतनी बड़ी शक्तिशाली महिला थी और उसी शक्ति के साथ उन्होंने लोगों की बहुत सेवा की। आज भी मैं सोचती हूं कि एक लोकप्रिय नेता की मृत्यु का सारे हिन्दुस्तान को गहरा दुःख हुआ है। वह ऐसी महान नेता थी जिन्होंने जनता के लिए बड़े-बड़े काम किये। हमें आज भी उन पर बड़ा गर्व महसूस होता है। इस महान महिला की मौत का सभी देशवासियों को बहुत दुःख हुआ। मुझे उनकी मृत्यु के बारे में सुनकर बहुत दुःख हुआ और मैं भगवान से प्रार्थना करती हूं कि उनकी आत्मा को शांति मिले। वहां की जनता ने उनकी बहुत सेवा की। जाते-जाते भी वह बड़ी शान से गईं। मुझे उनकी मृत्यु का बहुत दुःख हुआ है। धन्यवाद।

19/12/2016/1420/एन.एस./ए.जी./2

श्री कुलदीप कुमार : अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा जो शोक प्रस्ताव रखा गया है मैं यहां पर उसमें शामिल होने के लिए खड़ा हुआ हूं। आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। माननीय श्री ईश्वर दास धीमान जी हमारी मौजूदा विधान सभा के माननीय सदस्य रहे हैं। उनका देहांत 16 नवम्बर, 2016 को हुआ और इसका हम सबको बहुत दुःख है। 82 वर्ष की उम्र में वे हमारे से

बिछड़े हैं। जैसा कि बताया गया कि उन्होंने लगभग छः बार भोरंज विधान सभा क्षेत्र की नुमाईंदगी की और दो बार हिमाचल प्रदेश के शिक्षा मंत्री के नाते जनता की सेवा की। मुझे भी उनके साथ लगभग तीन कार्यकाल काम करने का मौका मिला और कई बार मैंने उनके साथ हमारी विधान सभा की कमेटियों में भी काम किया। विधान सभा की कल्याण समिति में वे हमारे साथ थे और मीटिंग में भी हम इक्ट्ठे थे। हमने उनके निधन का वहां पर भी शोक प्रस्ताव डाला है। जैसा कि माननीय विपक्ष के नेता जी ने कहा कि उनको गुरू जी कहकर पुकारते थे। मुझे वैसे भी जानकारी है कि वे हमारे पूर्व मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल जी के भी गुरू रहे हैं। मैं भी उनको गुरू जी कहकर ही पूछता था कि आप यह फॉर्मूला बता दीजिए कि आप लगातार ही जीतते रहे हैं और कभी हारे नहीं हैं,ऐसा क्या फॉर्मूला आपके पास है? वे बहुत ही सादे जीवन में रहे हैं और हमेशा जनता से जुड़े रहे हैं। तभी वे लगातार वहां से छः बार विधायक बने हैं। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति मिले और उनके परिवार को उनकी कमी को सहन करने की शक्ति दे। इसी के साथ तमिलनाडू की मुख्यमंत्री सुश्री जयललिता का जो निधन हुआ है, उसका भी शोक प्रस्ताव यहां पर लाया गया है। मैं उसमें अपने आपको शामिल करता हूं और उनको श्रद्धांजलि देता हूं। धन्यवाद।

19/12/2016/1420/एन.एस./ए.जी./3

श्री सुरेश भारद्वाज : अध्यक्ष महोदय, आज हम इस सदन के माननीय सदस्य आदरणीय श्री ईश्वर दास धीमान जी को श्रद्धांजलि देने के लिए यहां पर एकत्रित हुए हैं। आदरणीय ईश्वर दास धीमान जी लगातार 31 वर्ष तक सरकारी सेवा में शिक्षक के रूप में कार्य करते रहे और

श्री आर.के.एस. द्वारा जारी।

19/12/2016/1425/RKS/AG/1

श्री सुरेश भारद्धाज .... जारी

वर्ष 1990 के बाद 8वीं विधान सभा से 12वीं विधान सभा तक शायद यह पहला सदन होगा जिसमें आदरणीय ईश्वर दास धीमान जी हमारे मध्य उपस्थित नहीं हुए । आदरणीय धीमान जी इस सदन के सदस्य होने के साथ-साथ भारतीय जनता पार्टी विधायक दल के नेता और उप नेता भी रहे। वे दो बार प्रदेश के शिक्षा मंत्री के रूप में कार्यरत रहे। वर्ष 1998 से पूर्व यह कहा जाता था कि जो हिमाचल प्रदेश में शिक्षा मंत्री बनता है वह इस सदन में दूसरी बार जीत कर नहीं आता। परन्तु आदरणीय धीमान जी ने इस मिथ को भी तोड़ा और वर्ष 1998 में वे शिक्षा मंत्री बने तथा वर्ष 2003 में फिर से जीत कर आए। श्री ईश्वर दास धीमान वर्ष 2007 में दोबारा शिक्षा मंत्री बने और उसके बाद फिर से वर्ष 2012 में जीत कर आए। शिक्षा के प्रति जो उनका लगाव था वह बतौर शिक्षक ही नहीं बल्कि इस सदन में चाहे वे शिक्षा मंत्री रहे या सदस्य रहे वे हमेशा शिक्षा से संबंधित कोई भी चर्चा, चाहे वह गैर सरकारी संकल्प क्यों न हो बड़ी रुचि से भाग लेते थे। अगर वे सदन में किसी कारण नहीं भी आते थे और लिस्ट ऑफ बिज़नैस में शिक्षा पर किसी विषय को देखते थे तो तुरंत उनका संदेश आ जाता था कि मैं इस विषय पर बोलना चाहूंगा। जब वे शिक्षा मंत्री थे तो कई बार हम अग्रेसिव होकर उनके पास जाते थे तो वे बड़े प्रेम के साथ सुनते थे और जो काम उनके द्वारा नहीं हो सकते थे उनके बारे में भी वे अच्छे ढंग से समझाकर अपने पास से भेजते थे। उनके जाने से प्रदेश के शिक्षा जगत, इस सदन और साथ-ही-साथ उनके विधान सभा क्षेत्र में जहां से वे लगातार एक ही चुनाव चिन्ह पर एक ही पार्टी के सदस्य के रूप में जीत कर आए, वहां पर बहुत बड़ा वैक्यूम पैदा हुआ, जिसको भरना कठिन है। मैं उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। ईश्वर उनको सदगति दें और उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

19/12/2016/1425/RKS/AG/2

माननीय मुख्य मंत्री जी ने तमिलनाडु की पूर्व मुख्य मंत्री सुश्री जयललिता जी के बारे में जो प्रस्ताव प्रस्तुत किया है मैं उसमें भी अपने आप को शामिल करता हूं। चाहे अभिनय का क्षेत्र रहा हो अथवा राजनीति का क्षेत्र रहा हो दोनों ही क्षेत्रों में उन्होंने ऊंचाइयों को छूआ है। अभिनय के क्षेत्र में केवलमात्र साउथ इंडियन, तमिलियन पिक्चरों में एम.जी.आर.जैसे बहुत बड़े अभिनेता के साथ ही नहीं वरन् हिन्दी पिक्चरों में भी उन्होंने बहुत बड़ा नाम कमाया है। हिमाचल प्रदेश का सौभाग्य रहा है कि सुश्री जयललिता मनाली में अपनी पिक्चरों की शूटिंग के लिए आया करती थी जिसमें उनकी पूर्व सांसद श्री धर्मेन्द्र जी के साथ शूट हुई पिक्चर बहुत मशहूर हुई है। उसके बाद वे राजनीति में आई। राजनीति में उन्होंन राजनेता एम.जी.आर. के साथ बहुत काम किया लेकिन एम.जी.आर. के घर के लोग, विशेषकर उनकी धर्मपत्नी, उनको एम.जी.आर. के समीप नहीं रहने देना चाहती थी या राजनीति में नहीं आने देना चाहती थी। यहां तक की जब एम.जी.आर. जी की डैथ हुई और

श्री एस0 एल0 एस0 द्वारा जारी...

19.12.2016/1430/SLS-AS-1

श्री सुरेश भारद्वाज ... क्रमागत

जब उनका शव ले जाया जा रहा था, उस समय गाड़ी में चढ़ते हुए उनको धक्का दिया गया और चढ़ने नहीं दिया गया। फिर विधान सभा में जिस प्रकार से उनके साथ व्यवहार किया गया, उससे व्यथित होकर उन्होंने विष्णुगुप्त चाणक्य की तरह ही

किया, जिन्होंने अपने अपमान को देखते हुए यह कहा था कि मैं अपनी चोटी तब तक नहीं बांधूंगा जब तक मैं नंद वंश का विनाश नहीं कर लूंगा। उसी प्रकार सुश्री जयललिता जी ने भी शपथ ली थी कि मैं विधान सभा में तब आऊंगी जब प्रदेश का नेतृत्व मेरे हाथ में होगा। फिर वह विधान सभा में मुख्य मंत्री बनकर ही आई। उसके बाद वह कई बार मुख्य मंत्री बनती रही। उन्होंने बहुत से अप-डाऊन भी देखे। यहां तक की उन्हें जेल भी जाना पड़ा। वहां से वह बाइज़्ज़त बरी हुई और फिर से अपने प्रदेश की मुख्य मंत्री बनीं। आज ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है। हम रामायण में देखते हैं कि जब भगवान् राम वनवास पर गए तो भरत उनकी पादुकाएं लेकर राज करते रहे। तामिलनाडू की मुख्य मंत्री सुश्री जय ललिता जी के जेल जाने पर श्री परीनसेलवम जी ने उनका फोटो अपने पास रखकर शपथ ग्रहण की और तब तक उनकी कुर्सी पर नहीं बैठे जब तक वह दोबारा वापिस नहीं आ गई। फिर उनको कुर्सी सौंप दी। अभी भी वह उसी प्रकार से कर रहे हैं। सुश्री जय ललिता जी की आम जनता के बीच में जितनी लोकप्रियता रही, हिंदुस्तान में ऐसी लोकप्रियता बहुत कम मुख्य मंत्रियों की रही है। उन्होंने कई बहुत बड़े निर्णय लिए। वहां उनकी प्रशासन पर जितनी पकड़ थी, ऐसा हिंदुस्तान में बहुत कम ही देखने की मिलता है। आज वह हमारे मध्य नहीं है। उनका देहांत कम आयु में ही हो गया। राजनीति में 68 वर्ष की आयु ज्यादा नहीं होती और इस आयु में उनका निधन हुआ है। मैं उनको अपनी ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि देश में आम जनता और गरीबों के लिए काम करने वाले ऐसे राजनेता हमेशा पैदा होते रहें।

आपने मुझे इस विषय पर बोलने का समय दिया, आपका धन्यवाद।

19.12.2016/1430/SLS-AS-2

अध्यक्ष : पिछली विधान सभा के दौरान माननीय सदस्यों ने एक फ़ैसला किया था कि शोकोद्गार में केवल सदन के नेता और विपक्ष के नेता अपनी-अपनी बात रखेंगे। लेकिन अभी बोलने वाले सदस्यों की सूची बड़ी लंबी होती जा रही है, ten people want to

speak. ...(व्यवधान)...

प्रो० प्रेम कुमार धूमल : अध्यक्ष महोदय, जब भी किसी सीटिंग एम.एल.ए. की डैथ होती है, उसमें सभी बोलने वालों को बोलने दिया जाता है।

अध्यक्ष : नहीं, बोल तो सभी सकते हैं, लेकिन आपने ही पिछली बार यह फ़ैसला किया था। ...(व्यवधान)...ठीक है, सभी बोलें।

अब श्री महेश्वर सिंह जी अपनी बात रखेंगे।

19.12.2016/1430/SLS-AS-3

श्री महेश्वर सिंह : अध्यक्ष महोदय, जब भी कोई चुना हुआ सदस्य इस संसार से चला जाता है, परंपरा यही है कि न केवल हिमाचल में बल्कि सभी संबंधित सदनों में उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है और इससे संबंधित प्रस्ताव शोक संतप्त परिवार को भेजा जाता है। परंतु कुछ ऐसी महान विभूतियां होती हैं जो अपनी एक गहरी छाप छोड़ जाते हैं और अपना नाम अमर कर जाते हैं। ऐसी विभूतियों में से ही एक श्री ईश्वर दास धीमान जी थे जिन्होंने लगातार 31 वर्षों तक शिक्षा के क्षेत्र में अपनी सेवाएं प्रदान कीं। वह लगातार शिक्षा क्षेत्र से जुड़े रहे। फिर वर्ष 1990 में वह इस माननीय विधान सभा के सदस्य बने और लगातार 26 वर्ष तक, जब तक उन्होंने अंतिम सांस नहीं ले ली, वह 15 नंवबर तक इस माननीय सदन के सदस्य रहे। वह हमेशा सर्किय रहते थे। अपनी 82 वर्ष की आयु में भी वह इस सदन के प्रश्न काल में भाग लेते थे।

जारी ...गर्ग जी

19/12/2016/1435/**RG**/**AS**/1

श्री महेश्वर सिंह-----क्रमागत

एवं अन्य चर्चाओं में भी वे भाग लेते थे और जैसा माननीय धूमल जी ने कहा, तो हम सब उनको 'गुरू' के नाम से पुकारते थे। हमें एक बात उनकी हमेशा याद रहेगी कि जब वे इस सदन में बोलते थे, तो अपने दाहिने हाथ की अनामिका उंगली को एक अध्यापक के अन्दाज में हिलाते थे और अपनी बात दृढ़ता से कहते थे। वे लगातार जीत की ओर ही रहे और राजनीति में जो एक नारा लगता है वे उसको चरितार्थ करके चले गए, "जो न हारा है, न हारेगा, धीमान बाजी मारेगा," अन्तिम सांस तक वे इस सदन के सदस्य रहे। अध्यक्ष महोदय, मैं स्वर्गीय श्री ईश्वर दास धीमान जी के परिवार को इस गहन दुःख को सहन करने के लिए परमपिता परमात्मा के चरणों में प्रार्थना करता हूं कि पुण्यात्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

19/12/2016/1435/**RG**/**AS**/2

अध्यक्ष महोदय, इसके साथ-साथ माननीय मुख्य मंत्री जी ने तमिलनाडु की पूर्व मुख्य मंत्री सुश्री जयललिता जी के निधन पर भी यह शोक प्रस्ताव लाया है। सचमुच में वे गरीबों की मसीहा थीं। विशेष करके वे दलितों एवं गरीब महिलाओं की बहुत सेवा करके गई हैं। समाज में जो अन्य गरीब तबका था वे उनकी सेवा करने के लिए भी हमेशा तत्पर रहती थीं। मैं अपने आपको इस प्रस्ताव में भी सम्बद्ध करते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूं। आपने मुझे बोलने की अनुमति दी, इसके लिए आपका आभार व्यक्त करते हुए अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

19/12/2016/1435/**RG**/**AS**/3

अध्यक्ष : अब स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जी शोकोद्गार में भाग लेंगे।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री : माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बड़े ही दुःख का विषय है कि श्री ईश्वर दास धीमान जी जो लगातार 6 बार इस विधान सभा के सदस्य रहे और हमारे सहयोगी रहे, चाहे हम पक्ष में थे या विपक्ष में थे, अब वे हमारे बीच नहीं हैं। वे सदन में और बाहर भी हमेशा रचनात्मक भूमिका निभाते थे। जब वे विपक्ष में होते थे तब भी वे ऐसे विषय लाते थे जहां सरकार की कमियां होती थीं उनको उजागर करते थे और जहां सरकार ने अच्छे काम किए हैं उनकी तारीफ भी करते थे। जब पिछला वर्षाकालीन सत्र शिमला में हुआ उस समय उनकी तबियत कुछ अच्छी नहीं थी। उनका पुत्र हमारे स्वास्थ्य विभाग में उप निदेशक बना। उन्होंने मुझसे कहा कि आप उसको शिमला में लगा दो क्योंकि वह शिमला में मेरी देखभाल करेगा। उसको शिमला लगाया। उसके बाद उन्होंने कहा कि मुझे डॉक्टर की जरूरत है इसलिए यह अब इस्तीफा देना चाहता है और इसका इस्तीफा स्वीकार करें ताकि अब ये मेरी देखभाल कर सके। इसके पश्चात उनके पुत्र का इस्तीफा भी स्वीकार हुआ। उनके देहान्त के दो दिन के पश्चात ही उन्होंने अपने 82 वर्ष पूरे करने थे और उनके जन्म दिन का पूरा इन्तजाम उनके बेटे ने किया था, लेकिन ईश्वर को यह मंजूर नहीं था कि उनका जन्म दिन आए और 15 नवम्बर, 2016 को अपने गांव में ही उनका स्वर्गवास हो गया। मैंने भी समय निकाला और उनके गांव गया उनके परिवार के प्रति संवेदना प्रकट की। तब भी उनके बारे में उनके बेटे-बेटियों ने कई बातें मेरे ध्यान में लाईं। वे बहुत नेक आदमी थे, गरीबों के हिमायती थे और विशेष करके अनुसूचित जाति के लोगों के कल्याण के लिए वे हमेशा प्रतिबद्ध रहते थे, लेकिन आज वे हमारे बीच नहीं हैं और एक शून्य की स्थिति पैदा हो गई है।

हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को स्वर्ग में शांति मिले और उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

एम.एस. द्वारा जारी

19/12/2016/1440/**MS**/**AG**/1

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जारी------------

अध्यक्ष जी, इसी तरह से मुख्य मंत्री जी ने और विपक्ष के नेता ने भी सुश्री जयललिता के बारे में शोकोद्गार व्यक्त किए हैं जो तमिलनाडु की मुख्य मंत्री रही हैं और मुख्य मंत्री रहते हुए बीच में साढ़े तीन महीने अस्पताल में रहने के बाद उनकी मृत्यु हुई है। वह लोगों के बीच कितनी लोकप्रिय थी इस बात का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि लोग उनको "अम्मा" के नाम से बुलाते थे। उन्होंने बहुत कल्याणकारी कार्यक्रम अपने प्रदेश में चलाए थे और गरीबों के लिए मुफ्त खाने का प्रबंध भी किया था। वह लोकप्रिय नेता के साथ-साथ एक लोकप्रिय अभिनेत्री भी रही। उनके निधन से हमने देश के अंदर एक सुलझा हुआ और अच्छा राजनीतिज्ञ खो दिया है। उनके निधन पर हम शोक व्यक्त करते हैं और भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनके परिवारजनों को इस दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करे। अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद।

19/12/2016/1440/**MS**/**AG**/2

अध्यक्ष: अब श्री सतपाल सिंह सत्ती जी शोकोद्गार व्यक्त करेंगे।

श्री सतपाल सिंह सत्ती: अध्यक्ष महोदय, माननीय सदन के नेता श्री वीरभद्र सिंह जी ने जो ईश्वर दास धीमान जी के निधन पर शोक प्रस्ताव रखा है, उसमें मैं भी अपने आपको शामिल करता हूं।

अध्यक्ष जी, ईश्वर दास धीमान जी के साथ मुझे इस सदन में लगातार तीन बार काम करने का मौका मिला है। जैसे बताया भी गया कि ईश्वर दास धीमान जी ईमानदारी और कर्मठता के साथ काम करने वाले व्यक्ति थे। वे बड़े ही सौम्य स्वभाव के मालिक थे। सभी लोग उन्हें "गुरू" के नाम से ही बुलाते थे और गुरू के रूप में ही हम उनको आदर भी देते थे। हमने बहुत सी बातें यहां पर काम करते-करते उनसे सीखी हैं। वे ऐसे व्यक्ति थे जो लगातार छः बार चुनाव जीतकर लोगों से जुड़े रहे। इतने लम्बे कार्यकाल में कोई भी व्यक्ति उनके बारे में किसी भी तरह का आरोप नहीं लगा सकता, ऐसा हम कह सकते हैं। एक ऐसा व्यक्तित्व हमारे बीच से 15 नवम्बर को प्रभु के चरणों में विलीन हो गया है। धीमान जी ने पार्टी के लिए बहुत बड़े-बड़े काम किए हैं। पार्टी के

चुनाव चिह्न के ऊपर लगातार छः बार जीतने वाले व्यक्ति के रूप में वे याद किए जाते रहेंगे। हिमाचल प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने बहुत सुधार किए हैं। वे सबसे सुझाव लेकर आगे बढ़ते थे और शायद ही उन्होंने कभी पक्ष और विपक्ष में अंतर किया होगा। वे हरेक व्यक्ति का मान-सम्मान करते थे। अगर छोटा कार्यकर्त्ता भी उनके कमरे में आ जाता था तो वे बिल्कुल भी गुस्सा नहीं करते थे। मुझे आज भी याद है जब वे शिक्षा मंत्री थे तो एक बार इतनी भीड़ उनके कमरे में पड़ गई कि भीड़ के कारण उनके कमरे का दरवाजा ही टूटकर उनकी टेबल पर गिर गया। वे फिर भी नाराज नहीं हुए और उन्होंने खड़े होकर वहां उपस्थित अध्यापकों और कार्यकर्त्ताओं से कहा कि ऐसा करो मैं कमरे से बाहर चला जाता हूं, आप लोग मेरी कुर्सी पर बैठ जाओ। आप लोगों ने तो सचिवालय का दरवाजा ही तोड़ दिया है। हम यहां एक बहुत ही पवित्र स्थान पर हैं। कहने का मतलब यह है कि उनमें गुस्सा बिल्कुल नहीं था। एक बार ऐसे ही मेरी उनसे बातचीत हुई। मैंने कहा गुरू जी हम सभी नेता लोग शाम को घर देर से पहुंचते

19/12/2016/1440/**MS**/**AG**/3

हैं तथा देर से ही सोते हैं और अनेकों बार ऐसा होता है कि सुबह बहुत जल्दी ही हम सबके पास जरूरतमंद लोग आ जाते हैं। कई बार लगता है कि इनसे मिलना चाहिए लेकिन पहले नहा-धोकर नाश्ता कर लेते हैं। मैंने यह भी कहा कि गुरू जी कई बार तो लोग सुबह छः बजे ही घर पर आ जाते हैं तो क्या करना चाहिए? उन्होंने कहा बेटा, उनके साथ गुस्से में नहीं बोलना है। आपने उनके पास जाकर जो आपकी दिक्कत है वह भी उनको बतानी है और आप उनके पास जाकर उनसे कहो कि भाई साहब, आप तो बहुत लेट हो गए हैं मैं तो आपका रात से इंतजार कर रहा था। उन्होंने कहा कि बात वही है जो आप कहना चाहते हैं।

जारी श्री जे0एस0 द्वारा-----

19.12.2016/1445/**जेके**/**एजी**/1

श्री सतपाल सिंह सत्तीः-----जारी------

बात उसको वही बोलनी है और वह अपने आप समझ जाएगा कि मैं बहुत जल्दी आ गया हूं। यदि आप उसको गुस्से में बोलेंगे तो वह आपको बूथ पर ही मिलेगा। वह आपसे नाराज़ होगा और वह अपनी गलती नहीं मानेगा। इस तरह का उनके पास अनुभवों का खजाना था, जिसके कारण हम उनको गुरू जी भी कहते थे और गुरू बन कर वे गए भी।

मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनको अपने चरणों में स्थान दें और उनके परिवार को इस क्षति को सहन करने की शक्ति दें तथा हमारे दल को जो क्षति हुई है और उस क्षेत्र की जनता को जो क्षति हुई है, उसको पूरा करने का ईश्वर हमें बल प्रदान करें।

सुश्री जयललिता जी के शोकोद्गार का प्रस्ताव माननीय मुख्य मंत्री जी ने यहां पर रखा है और माननीय धूमल जी ने भी यहां पर अपने विचार व्यक्त किए हैं, मैं भी अपने आपको उस प्रस्ताव में शामिल करता हूं। मैं अपने दल की ओर से उन्हें श्रद्धाजंलि अर्पित करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनको अपने चरणों में स्थान दें। धन्यवाद।

19.12.2016/1445/**जेके**/**एजी**/2

अध्यक्ष: अब श्री रविन्द्र सिंह जी शोकोद्गार प्रस्ताव में भाग लेंगे।

श्री रविन्द्र सिंह: अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता ने जो शोकोद्गार प्रस्ताव यहां पर रखा और प्रतिपक्ष के नेता ने भी इसमें बोला है, मैं भी अपने आपको इसमें शामिल करता हूं। अध्यक्ष महोदय, यह बहुत ही दुख का विषय है। मुझे लगातार उनके साथ 23 वर्ष इस माननीय सदन में काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैं याद करता हूं जब हम पहली बार इस विधान सभा में चुन कर आए थे, विधान सभा की कार्यवाही से हम पूरी तरह अनभिज्ञ थे। उस समय हमारी पार्टी के केवल आठ विधायक ही जीते थे। उस समय

ठाकुर जगदेव चन्द जी का भी देहान्त हो गया और फिर हम सात विधायक ही रह गए थे। उसमें भी हम सात में से तीन विधायक दूसरी बार और चार विधायक पहली बार चुन कर आए थे। विधानसभा की कार्यवाही कैसे करनी है, विधान सभा के तारांकित प्रश्न और अतारांकित प्रश्न क्या होते हैं तथा अन्य नियम क्या हैं, तथा उन सभी पर कैसे चर्चा करनी है, मैं उनको धन्यवाद देना चाहूंगा कि उस समय जो एक गुरू की तरह उन्होंने हमारा मार्गदर्शन किया, उसके लिए एक विद्यार्थी के रूप में उनको हमने गुरू की संज्ञा दी है। उस विद्यार्थी के तौर पर मैं उनको और उनके दिए हुए ज्ञान को हमेशा याद करता रहूंगा । वे बहुत ही विनम्र, बहुत ही मृदुभाषी, बहुत ही मिलनसार थे ।राजनीति में स्पष्ट छवि, ईमानदार छवि बनाना अपने आपमें बहुत मुश्किल काम है। इसके वे धनी थे, इसमें कोई दो राय नहीं है। उनको पार्टी में रहते हुए और सरकार में रहते हुए जो भी जिम्मेदारी दी गई, मंत्री के तौर पर, शिक्षा मंत्री के तौर पर और विधायक के तौर पर, मैं मानता हूं कि शायद ही हम ऐसा निर्वहन कर पाए जैसा उन्होंने अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन किया है। उनके जाने से जहां इस माननीय विधान सभा और प्रदेश को नुकसान हुआ है, वहीं उनके अपने क्षेत्र जो पहले मेवा हुआ करता था और वर्तमान में भोरंज है उनको भी बहुत ज्यादा नुकसान हुआ है।

19.12.2016/1445/**जेके/एजी**/3

यह क्षतिपूर्ति कई वर्षों तक पूरी नहीं हो पाएगी, ऐसा मैं मानता हूं। मुझे व्यक्तिगत तौर पर भी उनके जाने का बहुत दुख हुआ है। अध्यक्ष महोदय, जैसे कि मेरे से पूर्व वक्ताओं ने बताया कि कई बार हम लोग गुस्सा भी कर देते थे लेकिन उनके चेहरे पर कभी गुस्सा नहीं देखते थे। यदि कभी विधान सभा में हम लोग गुस्सा कर भी देते थे तो बाद में वे कहा करते थे कि आपको ऐसा नहीं करना चाहिए था। ऐसी शिक्षा वे अंत तक देते रहे। मैं अपने आपको इस दुख की घड़ी में शामिल करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि स्वर्ग में उनकी आत्मा को शांति प्राप्त हो और उनके परिवार को इस असहनीय दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

अध्यक्ष महोदय, इसी के साथ तमिलनाडु की मुख्य मंत्री, सुश्री जयललिता का शोकोद्गार प्रस्ताव यहां पर रखा है, मैं उसमें भी अपने आपको शामिल करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनको स्वर्ग में शांति प्रदान करें और उनके परिवार को इस असहनीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का समय दिया आपका धन्यवाद।

श्री नरेन्द्र ठाकुर जी, एस0एस0 की बारी में.....

19.12.2016/1450/**SS**/**AS**/1

अध्यक्ष: अब श्री नरेन्द्र ठाकुर जी शोकोद्गार में भाग लेंगे।

श्री नरेन्द्र ठाकुर: आदरणीय अध्यक्ष जी, बड़े दुख से कहना पड़ रहा है कि आज कई वर्षों के बाद आदरणीय धीमान जी इस सदन में नहीं हैं। इनीशियल एजुकेशन के बाद उन्होंने अपनी हायर एजुकेशन एम0ए0 और एम0एड0 चंडीगढ़ व शिमला यूनिवर्सिटी से की और अपना कैरियर बतौर अध्यापक के रूप में शुरू किया। 13 वर्ष तक वे मुख्य अध्यापक भी रहे। बतौर शिक्षक जो उनकी कार्यशैली थी, उस कार्यशैली ने सबको प्रभावित किया। उनकी उस कार्यशैली की वजह से ही जब वे 1989 में रिटायर हुए तो स्वर्गीय ठाकुर जगदेव चंद जी ने उनको अपनी पार्टी में शामिल होने का न्यौता दिया। उन्होंने निमंत्रण एक्सैप्ट करके पहली बार इलैक्शन भोरंज निर्वाचन क्षेत्र से लड़ा और तब से लेकर आज तक वे लगातार छः बार एक ही निर्वाचन क्षेत्र से जीते। वे बहुत ही सॉफ्ट स्पोकन, हार्ड वर्कर और अपनी बात को सही ढंग से रखने वाले व्यक्तित्व थे। दो बार वे हिमाचल प्रदेश के शिक्षा मंत्री भी रहे। उन्होंने अपना पूरा राजनीतिक सफ़र और जीवन एक ईमानदार व्यक्ति के रूप में तय किया। आज के युग में अगर कोई राजनेता

यह छवि लेकर अपना सफ़र तय करता है कि एक बहुत ईमानदार पॉलिटिशियन था तो यह अपने आप में बहुत बड़ी बात है और ई0डी0 धीमान जी ने इस बात को पूरा किया। मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके परिवार वालों को भी शक्ति दे कि वे इस सदमे को सहन कर सकें। साथ में माननीय मुख्य मंत्री जी ने तमिलनाडु की मुख्य मंत्री, जयललिता की डैथ के बारे में जो दूसरा शोकोद्गार प्रस्ताव रखा मैं उसमें भी अपने आपको शामिल करना चाहूंगा। इसके साथ ही मैं यह भी कहना चाहूंगा कि तमिलनाडु की मुख्य मंत्री इतनी पापुलर थी कि उनकी डैथ के बाद भी लगभग 450-500 व्यक्तियों ने आत्मदाह किया। वह किस करिश्माई पर्सनैलिटी की नेता थीं, वह इसी बात से जाहिर हो जाता है, धन्यवाद।

19.12.2016/1450/**SS**/**AS**/2

अध्यक्ष: अब श्री कर्ण सिंह जी, माननीय सहकारिता मंत्री शोकोद्गार में भाग लेंगे।

सहकारिता मंत्री: आदरणीय अध्यक्ष जी, जो दो शोकोद्गार प्रस्ताव आदरणीय मुख्य मंत्री जी सदन में लेकर आए हैं मैं उसमें अपने आपको शामिल करता हूं। जहां तक आई0डी0 धीमान जी की बात है मुझे उनके साथ काम करने का सौभाग्य मिला। 1990 में मैं पहली बार सदन में आया, वे भी विधायक बने, उन्होंने तो लगातार छः बार जीतकर छक्का लगाया लेकिन मैं तो 10 साल बाहर भी रहा। मुझे उनके साथ काम करने का मौका मिला, वे शिक्षा मंत्री थे और मेरे पास प्राईमरी शिक्षा विभाग था। He was a through gentleman and a great soul, इतना ही मैं बोल सकता हूं। हमने उनसे बहुत कुछ सीखा and he was a right person qualified for the right post, जिसमें वे दो बार शिक्षा मंत्री रहे। उन्होंने एम0ए0, एम0एड0 की। हमने इकट्ठे काम किया और प्रदेश ने शिक्षा के क्षेत्र में केरला की बराबरी की। उनके व्यू क्लीयर थे, वे हैडमास्टर रह चुके थे। 15 नवम्बर को उनका देहांत हुआ। 16 नवम्बर को मैं उनके घर गया और उनके बेटे से मुलाकात की। I was shocked to see कि जो छः बार एम0एल0ए0 रहे और दो बार मंत्री रहे वे एक सिम्पल से घर में रह रहे हैं। कहने का मतलब यह है कि उनका जो

लोगों से प्यार था इसीलिए वे छः बार विधायक बने और दो बार मंत्री बने। उनकी ग्रेटनैस थी और मैं उनके काम करने की क्षमता को जानता हूं।

जारी श्रीमती के0एस0

19.12.2016/1455/**केएस/एएस**/1

सहकारिता मंत्री जारी-----

वे आज हमारे बीच में नहीं है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें तथा उनके परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

दूसरा प्रस्ताव मुख्य मंत्री जी ने मैडम जयललिता जी का लाया है। She was also a great lady. उस प्रस्ताव में भी मैं अपने आप को शामिल करता हूं। अध्यक्ष महोदय, आपने समय दिया, आपका धन्यवाद।

19.12.2016/1455/**केएस/एएस**/2

अध्यक्ष: अब डॉ0 राजीव बिन्दल जी चर्चा में भाग लेंगें।

डॉ0 राजीव बिन्दल: माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री ईश्वर दास धीमान जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए जो शोक प्रस्ताव इस माननीय सदन में प्रस्तुत हुआ है, मैं भी अपने आपको उसमें शामिल करता हूं। एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने अपना पूरा जीवन शिक्षा के क्षेत्र में समर्पित किया । उन्होंने अध्यापक रहते हुए भी और राजनीतिक क्षेत्र में आने के बाद भी शिक्षा के प्रति अपने आप को समर्पित किया। उनका एक सादगी भरा जीवन था और वे लगातार छः बार, लगभग 27 वर्षों तक इस विधान सभा में जीतकर आए और अपने विधान सभा क्षेत्र के लोगों की सेवा करने का जो व्रत उन्होंने लिया और सेवा करते-करते अपने आप को समर्पित किया, वह अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। हिमाचल प्रदेश ने एक बेहतरीन समाजसेवक, बेहतरीन राजनेता को खोया है । भोरंज विधान सभा क्षेत्र ने एक शानदार व्यक्तित्व खोया है। हम लोगों ने

लगभग 1998-2000 से लगातार उनके साथ काम किया। हमने उनके साथ रह कर काम सीखा और ऐसे व्यक्तित्व के धनी को खो कर आज हम अपने आप को शोकाकुल महसूस करते हैं। उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, उनके परिवार को दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें, भगवान से ऐसी कामना करते हुए हम इस सदन में अपना शोक प्रस्ताव प्रस्तुत करते हैं। धन्यवाद।

19.12.2016/1455/**केएस/एएस**/3

अध्यक्ष: अब श्री जय राम ठाकुर जी शोकोद्गार प्रस्ताव में भाग लेंगें।

श्री जय राम ठाकुर: माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो शोक प्रस्ताव इस माननीय सदन में प्रस्तुत किया है, मैं भी उसमें अपने आप को शामिल करता हूं। श्री ईश्वर दास धीमान जी के बारे में सभी माननीय सदस्यों ने अपनी बात कही है कि किस प्रकार का वह व्यक्तित्व था । उनको गुरुजी के नाम से जाना जाता था और मैं स्वयं महसूस करता हूं कि गुरुजी शायद उनका नाम इसलिए पड़ा क्योंकि वे अध्यापक थे लेकिन उसके बावजूद मेरा यह भी मानना है कि चाहे वे विधायक रहे या मंत्री रहे,उनकी भूमिका इस मानननीय सदन में भी गुरु के अनुरूप ही रही। वे धीमा बोलते थे, धैर्य के साथ बोलते थे लेकिन अपनी बात बहुत सटीक कहते थे। हम लोग जो राजनीतिक क्षेत्र में वर्षों से काम कर रहे हैं, कई बार बहुत से ऐसे दौर आते हैं जब हमें बहुत ज्यादा जोर से बोलने की आवश्यकता महसूस होती है चाहे उसका तर्क हो या न हो। लेकिन हमने धीमान जी को कभी माननीय सदन में जोर से बोलते हुए नहीं देखा। वे धीमा बोलते थे लेकिन जितना तेज बोलने वाले सदस्य हमारे इस माननीय सदन में हैं, उनसे भी ज्यादा संदेश उनकी बात में होता था। मैं इस बात को भी महसूस करता हूं कि एक विधान सभा क्षेत्र से आज के दौर में बार-बार जीत कर इस माननीय सदन में पहुंचना बहुत कठिन काम होता जा रहा है। पहले एक दौर था कम काम करने के

बावजूद भी इस माननीय सदन में बहुत से लोग बार-बार जीत कर आते थे लेकिन आज के इस दौर में यह सम्भव नहीं है।

श्रीमती अ0व0 द्वारा जारी---

19.12.2016/1500/AV/AG/1

शोकोद्गार-----

श्री जय राम ठाकुर------------- जारी

एक ही विधान सभा क्षेत्र से लगातार 6 बार जीतने का अभिप्राय हमें इस बात से लेना चाहिए कि उन्होंने लोगों का दिल जीता था। इसी वजह से वे इस मान्य सदन में चाहे एक विधायक बनकर या मंत्री मंडल में एक मंत्री के नाते अपने चुनाव क्षेत्र का वर्षों तक प्रतिनिधित्व करते रहें। हम पार्टी के बीच में भी काम करते थे तो वे बहुत सारी बातें कुछ हटकर कहते थे, वह उनके स्वभाव का एक हिस्सा था। मेरे पास पार्टी के अध्यक्ष के नाते जब जिम्मेवारी थी और चुनाव नज़दीक आने के कारण टिकटों की चर्चा होती थी, उस पर गहमा-गहमी होती थी कि इसको दिया जाना चाहिए और उसको नहीं दिया जाना चाहिए। ऐसे अवसर पर समर्थन में और विरोध में तर्क आते हैं। लेकिन उसके बावजूद भी वे अपनी बात बड़ी सरलता और सहजता से कहते थे। एक बार एक बड़े नेता के बारे में चर्चा होने लगी कि उनका नाम है और उनको टिकट देना चाहिए। लेकिन उन्होंने सहज रूप से अपनी बात कही और कितनी सटीक बात कही कि जिस नेता का आप जिक्र कर रहे हैं वह जाने तो जाते हैं मगर माने नहीं जाते। यानि अपनी बात को सहजता से कहने का उनका अपना एक स्वभाव था। इस बात की वजह से मुझे लगता है कि इस मान्य सदन में उनके माध्यम से जो कई बातें रखी जाती थीं उनसे हम सबको सीख लेनी चाहिए और मैं महसूस करता हूं कि आदरणीय धीमान जी आज हमारे बीच नहीं हैं। उनके निधन से हमारे प्रदेश तथा हमारे दल को क्षति हुई है।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से अपनी और इस मान्य सदन की ओर से संवेदनाएं व्यक्त करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें। मैं इस बात को लेकर भी उम्मीद करता हूं कि हमें उनके जीवन से बहुत कुछ सीखना चाहिए और उस सीख के माध्यम से हम अपना सहयोग इस मान्य सदन में जिस प्रकार दे सकते हैं वह सहयोग देने की कोशिश करनी चाहिए।

19.12.2016/1500/**AV**/**AG**/2

अध्यक्ष महोदय, यहां पर तमिलनाडू की पूर्व मुख्य मंत्री सुश्री जयललिता के निधन पर भी शोकोद्गार प्रकट किए हैं, मैं उसमें भी अपने आपको शामिल करता हूं। आपने समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

19.12.2016/1500/**AV**/**AG**/3

श्री विजय अग्निहोत्री : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री जी ने स्वर्गीय श्री ईश्वर दास धीमान जी और सुश्री जयललिता जी के निधन पर जो शोकोद्गार प्रकट किए हैं, उसमें मैं भी अपने आपको शामिल करता हूं। 15 नवम्बर, 2016 को श्री ईश्वर दास धीमान जी हमारे बीच में से चले गये। यह सही है जैसे मेरे से पूर्व वक्ताओं ने कहा कि उन्हें गुरुजी के नाम से जाना जाता था। इस सदन में लगातार 6 बार प्रतिनिधित्व करते हुए उन्होंने बहुत सारी चीजें एस्टेब्लिश की तथा बहुत से आयाम स्थापित किए। सबसे बड़ा आयाम उन्होंने यह स्थापित किया कि इतने वर्षों तक राजनीति में रहने के बावजूद पीठ के पीछे भी कोई व्यक्ति कभी उनकी निन्दा करते हुए या उनके विरुद्ध बोलते हुए नहीं देखा। ऐसा राजनीतिज्ञ बहुत मुश्किल से पैदा होता है। नादौन विधान सभा क्षेत्र से उनका विशेष लगाव रहा है क्योंकि उन्होंने वहां मुख्य अध्यापक के रूप में अधिकांश सेवाएं दी हैं। उनका नादौन से भावनात्मक जुड़ाव था और वे वहां पर बहुत बार आते थे। मैं 15 नवम्बर से दो दिन पहले उनसे मिलने भी गया था। उनके हाथ-पांव ठीक से चल नहीं रहे थे। वे बोल रहे थे कि मैं आपसे हाथ मिलाना चाह रहा हूं

श्री वर्मा द्वारा जारी

19/12/2016/1505/TCV/AG/1

श्री विजय अग्निहोत्री -- जारी

लेकिन मेरा हाथ उठ नहीं रहा है। इसके दो दिन बाद ही उनका देहान्त हो गया। वे शेर बहुत बोलते थे, एक बार वह नादौन में आए और उन्होंने एक शेर बोला था जो मुझे आज भी याद हैः

'कल तक ये कहते थे कि बिस्तर से उठा जाता नहीं,
आज दुनिया से चले जाने की हिम्मत आ गई।'

इसके अलावा बहुत से विषय पर उनसे मार्गदर्शन मिलता रहा है और उनके जीवन से बहुत कुछ सिखने को मिलता है। मैं जब हत्तोउत्साहित हो जाता था, तो उनके पास जाता था, वे कहते थे कि बहुत ज्यादा दुःखी होने की जरूरत नहीं होती है। वे कई बार एक शेर कहते थे जो मुझे याद है किः

'**हाथों की लकीरों को देखकर परेशान न हो**,
नसीब तो उनके भी होते हैं, **जिनके हाथ नहीं होते** ।'

ऐसे साधारण व्यक्तित्व और आम व्यक्ति की तरह व्यवहार करने वाले इतने लम्बे समय तक राजनैतिक क्षेत्र में सेवा करने वाले व्यक्तित्व का हमारे बीच से चले जाना जहां प्रदेश/भोरंज विधान सभा क्षेत्र के लिए बहुत बड़ी क्षति है, वहीं, व्यक्तिगत रूप से मुझे भी हानि हुई है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि हमें उनकी जिन्दगी से बहुत कुछ सीखने की प्रेरणा मिले, जैसे मिलती रही है। उनकी आत्मा को भगवान शान्ति दें तथा उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

इसके साथ ही मैं सुश्री जयललिता के शोकोद्गार में अपने आपको शामिल करता हूं और उनकी आत्मा की शान्ति के लिए भगवान से प्रार्थना करता हूं। ईश्वर उनके परिवार को इस सदमे को सहने की शक्ति दें, ऐसी मैं कामना करता हूं।

19/12/2016/1505/**TCV**/**AG**/2

अध्यक्ष: स्वर्गीय श्री ईश्वर दास धीमान, सदस्य व स्वर्गीय सुश्री जयललिता, तत्कालीन मुख्य मंत्री तमिलनाडू के निधन के संबंध में जो उल्लेख सदन में प्रस्तुत किए गए हैं, उसमें मैं भी अपने आप को शामिल करता हूं। श्री ईश्वर दास जी एक स्वच्छ छवि के व्यक्तित्व थे, उन्होंने अंतिम समय तक सदन के कार्यों का निर्वहन बड़ी गंभीरता से किया। वे ई-विधान में भी बड़ी गहरी रूचि रखते थे। मैं शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूं और इस मान्य सदन की भावनाओं को शोक संतप्त परिवारों तक पहुंचा दिया जाएगा। अब मैं सभी माननीय सदस्यों से आग्रह करूंगा कि दिवंगत् आत्मा को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने के लिए अपने-अपने स्थान पर कुछ क्षण के लिए मौन खड़े हो जाए।

(**सभी माननीय सदस्य दिवंगत आत्मा को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने हेतु अपने-अपने स्थान पर मौन खड़े हुए**)

श्रीमती एन0एस0---- द्वारा जारी ।

19/12/2016/1510/**एन.एस.**/**ए.एस.**/1

अध्यक्ष -----जारी।

जैसा कि पूर्व परम्परा रही है कि यदि किसी Sitting Member का निधन हो जाए तो सभा की कार्यवाही शोकोद्गार के उपरान्त उनके सम्मान में स्थगित कर दी जाती है। अतः यदि सदन की सहमति हो तो दिवंगत आत्मा के सम्मान में आज की कार्यवाही स्थगित कर दी जाए?

सदस्यगण : अध्यक्ष महोदय, ठीक है।

मुख्य मंत्री : अध्यक्ष महोदय, ऐसी परम्परा भी है।

अध्यक्ष: आज की कार्यसूची में सम्मिलित किए गए प्रश्नों के उत्तर उन मन्त्रियों के द्वारा जिन्हें ऐसे प्रश्न सम्बोधित किए गए हैं, सभा पटल पर रखे गए माने जाएगें और आज की कार्यवाही का हिस्सा बन जाएंगे।

अब इस मान्य सदन की बैठक दिवंगत नेता के सम्मान में मंगलवार, 20 दिसम्बर, 2016 के 11:00 बजे (पूर्वाह्न) तक स्थगित की जाती है।

धर्मशाला-176215 **सुन्दर सिंह वर्मा**,
दिनांक : 19 **दिसम्बर**, 2016 **सचिव।**